हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 13-08-2017/3.

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): _____

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

उत्तम प्रयास

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 148 1/2 टिप्पणी (Remarks): _____

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। ईसाई मिशनरियों का उद्देश्य भारत में ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करना था। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर उन्होंने प्रारंभ में फारसी भाषा को महत्व दिया, किंतु शीघ्र ही उन्हें यह एहसास हो गया कि भारत की बहुसंख्यक आबादी हिंदी समझती है।

ईसाई प्रचारक 'गिलक्राइस्ट' और 'चेम्बरलिन' ने सर्वप्रथम ~~हिंदी~~ खड़ी बोली के प्रसार का प्रयास किया। इसी क्रम में 'कोलब्रुक' ने बाइबिल का हिंदी रूपान्तरण किया और इस हिंदी रूपांतरित साहित्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का विभिन्न स्थानों पर प्रचार-प्रसार किया।

इसके अतिरिक्त 'मार्टिन वीवर' ने भी बाइबिल का रूपान्तरण किया। वस्तुतः ईसाई प्रचारक क्षेत्र में घूम-घूमकर साहित्य बांटते थे। इस प्रक्रिया में खड़ी बोली का भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसार हुआ।

हालांकि ईसाई प्रचारकों ने खड़ी बोली के प्रसार में योगदान दिया, किंतु उनका उद्देश्य खड़ी बोली का प्रचार नहीं बल्कि ईसाई धर्म का प्रसार था।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्य सम्मेलन का गठन पुरुषोत्तम दास टंडन के नेतृत्व में हुआ। सम्मेलन देवनागरी लिपि के प्रसार के लिए निरंतर प्रयत्नशील रही। इसने देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु ~~निम्न~~ निम्नलिखित सुझाव दिए -

(क) सावरकर बंधुओं द्वारा सुझाई गई 'अ' की बारहखड़ी पाई को स्वीकार करना चाहिए।

(ख) व्यंजन संयोग की स्थिति में ऊपर - नीचे लिखने की बजाय व्यंजन को दाएं लिखा जाना चाहिए। जैसे - द्य - द्‌य

(ग) ध और घ में भिन्नता दर्शाने के लिए घुण्डी का प्रयोग आवश्यक है।

(घ) मुद्रण में शिरोरेखा का प्रयोग अपेक्षित है, किंतु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेखन में शिरोरेखा के प्रयोग को छोड़ा जा सकता है।

(ङ) 'इ' इतनि को छोड़कर अन्य मात्राओं को वर्ण के ~~पश्चात~~ दाएं अलग से लिखा जाना चाहिए। जैसे-

रानी - र ा न ी

मोहन - म ो ह न

6.5/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) खड़ी बोली आंदोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

खड़ी बोली आंदोलन में 'अयोध्या प्रसाद खत्री' का महत्वपूर्ण योगदान है। 'खत्री' द्विवेदी ~~से~~ युग से संबंधित लेखक हैं। ~~खत्री~~ द्विवेदी जी ने खड़ी बोली को काव्य के रूप में स्थापित करने के लिए एक आंदोलन चलाया, जिससे खत्री जी भी जुड़े रहे।

वस्तुतः भारतेन्दु हरिश्चंद्र का मानना था कि ~~खि~~ खड़ी बोली काव्य भाषा के रूप में स्थापित नहीं हो सकती है किंतु अयोध्या प्रसाद खत्री ने इसे काव्य भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

काल में खड़ी बोली के प्रचारक खत्री एवं ब्रज के प्रचारक प्रताप नारायण मिश्र, दोनों के मध्य काफी विवाद हुआ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खत्री ने काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली के प्रसार के लिए अनेक रचनाएँ की और उन्होंने कहा कि "खड़ी बोली में भी काव्य को व्यक्त करने का माधुर्य है।"

अतः हम कह सकते हैं कि खत्री का खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

'हिन्दी आकर्षण'
'खड़ी बोली का पद्य'
आदि पुस्तकों की रचना की।

5 1/2
10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि: अंतर्संबंध

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि अंतर्संबंधित है। वस्तुतः नागरी लिपि का प्रस्थान बिंदु ब्राह्मी लिपि को ही माना जाता है।

ब्राह्मी लिपि से ही नागरी लिपि का विकास हुआ है। सर्वप्रथम ब्राह्मी लिपि उत्तरी ब्राह्मी और दक्षिणी ब्राह्मी में विभाजित है। गुप्त काल में उत्तरी ब्राह्मी में अक्षर टेढ़े लिखे जाने के कारण इसे 'कुटिल ब्राह्मी' भी कहा जाता है। जबकि इसी उत्तरी ब्राह्मी का एक रूप कश्मीर में प्रचलित हुआ, जिसे शारदा ब्राह्मी कहते है।

उत्तरी ब्राह्मी की शाखा कुटिल ब्राह्मी से

ब्राह्मी बाँयी ओर से दाँयी ओर लिखी जाती थी। अक्षर प्रायः सीधे होते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मराठी, सिंधी गुजराती और हिंदी से संबंधित 'प्राचीन ब्राह्मी' का विकास हुआ। हिंदी भाषा को जिस लिपि में व्यक्त किया जाता है, उसे देवनागरी लिपि कहते है।

देवनागरी लिपि एवं ब्राह्मी लिपि के अंतर्संबंध को निम्न आरेख द्वारा समझा जा सकता है।

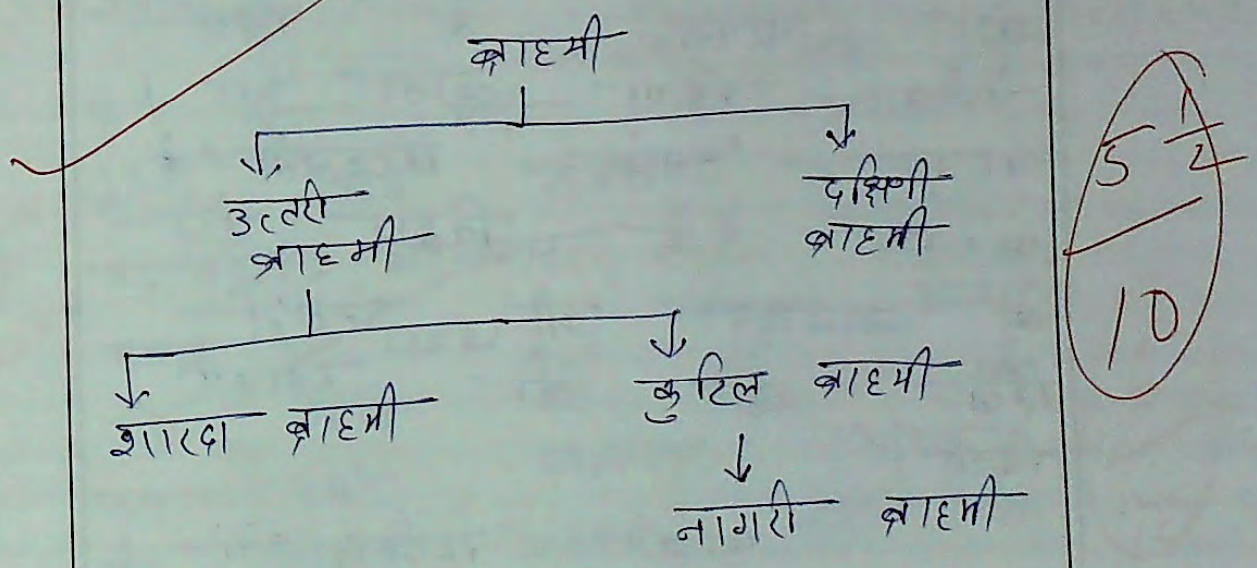

5 1/2
10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~सभा~~ ~~स्वामी~~ ~~सच~~ ~~द्वारा~~ ~~स्थापित~~ ~~[illegible]~~

दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' का राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

आर्य समाज के प्रत्येक अनुयायी को हिंदी को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता था। वस्तुतः 'दयानंद सरस्वती' के संस्कृत के विद्वान होने के बावजूद भी, उन्होंने हिंदी को ही स्वीकार किया।

उन्होंने हिंदी में 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की, जो आर्य समाज से संबंधित प्रमुख पुस्तक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आर्य समाज ने ~~यहाँ~~ जगह - जगह हिंदी के प्रचार के लिए आयोजन कराए। वस्तुतः सरस्वती का मानना था कि हिंदी ही ~~भाषा~~ आर्य की राष्ट्रभाषा हो सकती है। इसीलिए वह आर्य के विभिन्न हिस्सों गुजरात, तमिल नाडु इत्यादि में हिंदी का प्रचार करते थे।

'आर्य दर्पण' पत्र का प्रकाशन।

अन्य लगभग पचास पत्र विभिन्न स्थानों से प्रकाशित।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि हिंदी के प्रसार में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान है और आर्य समाज निरंतर भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए प्रयास करती रही

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 20

राजभाषा हिंदी के पूरे देश में प्रचार-प्रसार एवं समझने योग्य बनाए जाने के लिए 'त्रिभाषा-सूत्र' की परिकल्पना की गई। वस्तुतः त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से हिंदी को दक्षिण भारतीय राज्यों एवं उत्तर पूर्वी राज्यों में भी स्थापित करने का प्रयास किया गया।

त्रिभाषा-सूत्र के अंतर्गत तीन भाषाओं के ज्ञान पर बल दिया गया। इसके अंतर्गत मातृ भाषा, हिंदी और एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के तौर पर अंग्रेजी को स्वीकार किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अंतर्गत प्रावधान किया गया कि प्रत्येक बच्चे को ~~मातृ~~ प्राथमिक शिक्षा उसकी मातृ भाषा में प्रदान की जाए। माध्यमिक स्तर से पहले तक उसे एक अन्य भाषा का ज्ञान कराया जाता है। उत्तर भारतीय 'हिंदी' के अलावा किसी अन्य भाषा, विशेषकर दक्षिण भारतीय ~~तथा~~ या कोई उत्तर पूर्वी भाषा को सीखें। इसी प्रकार दक्षिण भारत के बच्चों को ~~दक्षिण~~ हिंदी का बोध कराया जाए। इसके अतिरिक्त माध्यमिक स्तर पर ज्ञान - विज्ञान की शिक्षा अंग्रेजी में ~~भी~~ दी जाए।

वस्तुतः त्रिभाषा सूत्र हिंदी के विकास के लिए प्रभावी कदम था। यदि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

यह संपूर्ण देश में निष्पक्ष रूप से लागू हो जाता, तो हिंदी का संपूर्ण भारत में प्रसार ~~में~~ हो सकता था।

किंतु इस सूत्र का भी हिंदी के प्रसार संबंधी अन्य योजनाओं की तरह ही परिणाम रहा। वस्तुतः नवोदय जैसे विद्यालयों को छोड़ दिया जाए, तो किसी भी अन्य विद्यालय ने इसे मूल रूप में स्वीकार नहीं किया। बल्कि इसके तोड़ के लिए तीसरी भाषा के रूप में कोई अपनी नजदीकी भाषा का ही चुनाव किया। यह सूत्र असफल सिद्ध हुआ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि हिंदी का प्रसार संपूर्ण भारत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में करता है, तो त्रिभाषा-~~सूत्र~~ सूत्र उसका सबसे सरल माध्यम हो सकता है।

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं -

→ देवनागरी लिपि की वर्णमाला अत्यंत जटिल है। इसमें वर्णों की संख्या अधिक, जिससे इसको सीखना जटिल है, अतः इसे सरल बनाया जाए।

→ वर्तमान में अनेक ध्वनियां जैसे - ऋ, ऌ इत्यादि का प्रयोग नहीं हो रहा है अतः इन्हें समाप्त किया जाना चाहिए।

→ कुछ वर्ण जैसे - श → स, ऋ → रि के रूप में प्रयोग होने लगे हैं, अतः इन्हें दूसरे रूप में ही स्वीकार करना चाहिए।

→ ञ एवं ङ को अनुस्वार के रूप में प्रयोग किया जाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लगा है। जैसे - कञ्चन → कंचन। अतः इनके अनुस्वार रूप को स्वीकार किया जाना चाहिए। हालांकि इन ध्वनियों को बना रहना चाहिए क्योंकि वर्तमान में उत्तर-पूर्वी भाषा एवं संस्कृत में ये ध्वनियां विद्यमान हैं।

→ देवनागरी लिपि में मात्राओं का प्रयोग ऊपर-नीचे, आगे-पीछे होता है, जिससे सीखने एवं लिखने में दुरुहता होती है, अतः इस प्रणाली को सरल बनाया जाना चाहिए।

→ देवनागरी लिपि को संपूर्ण भारत में प्रचलित कराने के लिए आवश्यक है कि इसमें अन्य भाषाओं की ध्वनियों को भी जोड़ा जाए जैसे -

तमिल - अ़ ओ़, क़ ऩ

मलयालम - अ़ ओ़, क़ ऱ ट़

असमिया - य़

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ ओ और औ के बीच की मध्यम ध्वनि को स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके लिए ध्वनि के ऊपर अर्द्ध चंद्र का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे - डॉक्टर

→ अंग्रेजी के शब्दों को स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान में अनेक ~~हिंदी~~ अंग्रेजी की ध्वनियां हिंदी में प्रचलित है।

→ अंकों का मानकीकरण एक बहुत बड़ी समस्या है। देवनागरी में 'नौ' के दो रूप मिलते हैं। अतः इस द्विरूपता को समाप्त करना चाहिए।

→ कुछ ध्वनियों जैसे - व - ब, स - श इत्यादि में समस्याएँ। अतः उनकी सही रूप ही मान्य हो। जैसे -
अमान्य - मान्य
सड़क → सड़क
जजमान → यजमान

निम्न सुझावों को मानकर देवनागरी लिपि को मानक रूप प्रदान कर सकते हैं और देवनागरी लिपि के प्रसार में भी सहायता मिले।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का ऐतिहासिक महत्त्व है।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नागरी प्रचारिणी सभा' अपने स्थापना काल से हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास के लिए प्रयास किया। सभा से 'श्यामसुंदर दास', 'मदनमोहन मालवीय', चौधरी बदरीनारायण जैसे हिंदी के प्रकाण्ड विद्वान जुड़े रहे।

'हिन्दी शब्द सागर', 'हिंदी विश्वकोष', 'वैज्ञानिक शब्दावली' का प्रकाशन

नागरी प्रचारिणी सभा ने प्राचीन हस्तलिपियों एवं पांडुलिपियों की खोज की। इसके अतिरिक्त यह हिंदी साहित्येतिहास लेखन के कार्य में संलग्न रही।

नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में ही हिंदी साहित्य सम्मेलन का गठन हुआ। यह सम्मेलन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्नशील रहा।

नागरी प्रचारणी सभा ने हिंदी के प्रसार के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों में ~~सभा~~ सम्मेलन आयोजित किए। हिंदी रचनाकारों को संरक्षण दिया। हिंदी रचनाकारों को पुरस्कृत किया, जिससे उनका मनोबल बना रह सके।

नागरी प्रचारणी सभा ने लिपि के विकास के लिए भी सुझाव दिया। सभा देवनागरी लिपि के मानकीकरण के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। नागरी प्रचारिणी सभा में हिंदी लिपि के मानकीकरण के लिए अनेक ग्रंथों की रचना की गई।

'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन किया।

शोध पत्रिका 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का लगातार प्रकाशन

हिंदी शब्दसागर तथा आचार्य किशोरीदास वाजपेयी द्वारा लिखित व्याकरण का प्रकाशन।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः हम कह सकते हैं कि नागरी प्रचारिणी सभा का हिंदी भाषा और लिपि के विकास में अप्रतिम योगदान है।

9
15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में निम्नलिखित व्यक्तियों के योगदान पर प्रकाश डालिये:

(i) महात्मा गांधी 20
(ii) बाल गंगाधर तिलक 10
(iii) मदनमोहन मालवीय 10
(iv) सेठ गोविन्द दास 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) महात्मा गांधी →

महात्मा गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किया। गांधी जी ने 'स्वराज' के प्रश्न को 'हिंदी' के प्रश्न से जोड़ा।

गांधी जी का मानना था कि भारत को यदि ब्रिटिश सत्ता से आजादी प्राप्त करनी है, तो यहाँ के लोगों को एक सूत्र में पिरोना होगा और हिंदी के अतिरिक्त अन्य कोई भाषा लोगों को एक-दूसरे में बांधने में सक्षम नहीं है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गांधी जी ने 1918 के अधिवेशन में हिंदी के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किया। वस्तुतः कांग्रेस के इस अधिवेशन में प्रस्ताव पारित हुआ कि कांग्रेस अपने सभी कार्य क्षेत्रीय भाषाओं और विशेषतः हिंदी में करेगा।

1925 के कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी ने 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' की देवनागरी लिपि के प्रसार से संबंधित सुझावों को स्वीकारा। गांधी जी ने कहा कि किसी भी भाषा में राष्ट्रभाषा बनने के लिए निम्न विशेषताएं होनी चाहिए-

(क) देश का बहुसंख्यक वर्ग उसको समझता है।
(ख) सीखने में सरल हो।
(ग) देश की सामाजिक,

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आर्थिक और संस्कृति को व्यक्त करने में समर्थ हो।

(घ) भाषा की अल्पकालिक और क्षणिक स्थिति न हो।

गांधी जी का मानना था कि हिंदी इन कसौटियों पर खरी उतरती है, इसलिए हिंदी को ही भारत की राष्ट्रभाषा होना चाहिए।

गांधी जी ने भी हिंदी के प्रसार के लिए आंदोलन चलाया। उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, हैदराबाद की स्थापना की। गुजरात पीठ, वर्धा पीठ आदि की स्थापना की। इसके अतिरिक्त इनकी प्रेरणा से ही उड़ीसा शिक्षा मण्डल, असमिया – हिंदी साहित्य परिषद की स्थापना हुई। ये सभी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्थाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए लगी रहीं।

अतः हम कह सकते हैं कि गांधी जी का हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

12½/20

बाल गंगाधर तिलक →

'स्वदेशी' पर बल देने वाले बाल गंगाधर तिलक हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित कराना चाहते थे। तिलक का मानना था कि किसी भी देश की स्वतंत्रता के लिए वहाँ के लोगों में मेलजोल आवश्यक है और इसके लिए भाषा ही एक माध्यम हो सकती है, जिसमें 'हिंदी' ही सर्वप्रमुख है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तिलक ने 'हिंदी केसरी' पत्र का संपादन किया। इस पत्र के माध्यम से भी वह निरंतर हिंदी का प्रचार - प्रसार करते रहे। इसके अतिरिक्त इन्होंने ~~दयानंद~~ ~~इन्होंने~~ ~~वैदिक~~ देवनागरी के लिए 'तिलक फान्ट' का आविष्कार किया जिससे सहायता से देवनागरी लिपि का मुद्रण आसान हुआ।

इसके अलावा तिलक घूम - घूमकर - गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र इत्यादि में हिंदी का प्रसार प्रसार करते रहे।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मदनमोहन मालवीय →

मदनमोहन मालवीय का हिंदी के राष्ट्रभाषा के रूप में विकास करने में महत्वपूर्ण योगदान है। मालवीय जी ने हिंदुस्तान पत्र का संपादन किया, जो हिंदी का अत्यधिक लोकप्रिय पत्र बना।

इसके अतिरिक्त मालवीय जी 'नागरी प्रचारणी सभा' से भी बड़े रहे जिसके माध्यम से इन्होंने पूरे देश में हिन्दी का प्रचार - प्रसार किया।

'मालवीय जी ने 'अभ्युदय' एवं 'सनातन धर्म' नामक हिंदी पत्रिकाओं का भी प्रकाशन किया। मालवीय जी का मानना था

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कि भारत में हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी हो सकती है।

मालवीय जी निरंतर हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहे। मालवीय जी ने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्य किए।

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने में ~~हिंदी का~~ मालवीय जी का महत्वपूर्ण योगदान है।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की, जहाँ हिंदी की शिक्षा अनिवार्य थी

5½/10

सेठ गोविन्द दास ⇒

संविधान सभा में हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने ~~में~~ के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए सेठ गोविन्द दास ने सबसे अधिक प्रयास किया।

वस्तुत: संविधान सभा में ~~के~~ सेठ गोविन्द दास ने प्रश्न उठाया कि जब स्वतंत्रता के पूर्व यह निर्धारित हो गया था कि हिंदी ही राष्ट्रभाषा होगी, तो अब इसे क्यों स्वीकार नहीं किया जा रहा ? उन्होंने 'हिंदी' को संसार की सबसे वैज्ञानिक भाषा बताया।

सेठ गोविन्द दास ने संसद में अपनी पार्टी के ~~व्हिप~~ व्हिप के विरुद्ध हिंदी के पक्ष में मतदान किया।

अत: हम कह सकते हैं कि हिंदी ~~को~~ के संबंध में वर्तमान

'शारदा', 'भवन', 'नामक' पुस्तकालय की स्थापना की।

'शारदा', 'लोकमत', 'जयहिन्द' आदि पत्रों द्वारा हिंदी का प्रचार किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में संविधान में जितने भी प्रावधान हैं, उनमें उनको सम्मिलित कराने में सेठ गोविंद दास का महत्वपूर्ण योगदान है।

5 1/2 / 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) प्रताप नारायण मिश्र

प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु मण्डल से संबंधित रचनाकार हैं। ये बेहद चिंदापिल व्यक्ति हैं, जिसका प्रभाव इनके साहित्य पर भी दिखता है। ~~मिश्री~~ मिश्र जी ने कविता संग्रह, निबंध, नाटक और उपन्यास सभी पर अपनी लेखनी चलाई।

प्रताप नारायण मिश्र ने कविताओं को अत्यधिक महत्व दिया। इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं - 'प्रेम की लहर', 'प्रेमपुष्पावली', 'शृंगार विलास', 'लोकोक्तिशतक'। इसके अतिरिक्त प्रताप जी कानपुर के रसिक समाज के बीच लावनियां भी गाते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रताप जी 'बुढ़ापा' एवं गोरक्षा जैसे विषयों पर भी लिखा। उन्होंने समाज से संबंधित विषयों पर भी लिखा। उदाहरण के लिए वह कहते हैं कि यदि पढ़-लिखकर व्यक्ति देश के काम न आए तो वह बेकार है -
"पढ़ि, लिखि काम कीन्हि, हरे न देश कलेश,
जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेश।"

~~प्रसाद~~ प्रताप जी ने 'कानपुर और नाटक', 'कन्नौज के तीन दिन', रिश्वत, पंचपरमेश्वर जैसे भावपूर्ण निबंध भी लिखे, इसलिए इन्हें भारत का स्टील कहा जाता है।

जुआरी-खुआरी, कलि प्रभाव इत्यादि इनके प्रमुख नाटक हैं। तो साथ ही इन्होंने 'ब्राह्मण' नामक पत्र का संपादन भी किया।

समस्यापूर्ति भी करते थे

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविवचन सुधा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कविवचन सुधा

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की महत्वपूर्ण पत्रिका है। इसी के साथ भारत में ~~भारत~~ पत्रकारिता का वास्तविक आगमन माना जाता है।

'कविवचन सुधा' में प्राचीन कवियों से संबंधित लेख लिखे जाते थे। इस पत्रिका के कारण आम जन अनेक लेखकों से परिचित हुए।

प्रारंभ में यह पत्रिका 'मासिक पत्रिका' के रूप में प्रारंभ हुई, किंतु शीघ्र ही यह पाक्षिक हो गई और इसका दायरा भी व्यापक हो गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसमें सामाजिक एवं आर्थिक तथा मानव जीवन संबंधित लेख भी लिखे जाने लगे। हरिश्चंद्र स्वयं ही इसमें आलेख लिखते थे।

अतः हम कह सकते हैं कि 'कविवचन सुधा' ने हिंदी में पत्रकारिता का व्यापक प्रसार किया। इसी की प्रेरणा लेकर 'भट्ट जी' और प्रताप नारायण मिश्र ने भी पत्रकारिता के क्षेत्र में लेखन किया।

5 1/2 / 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

हिंदी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा 'सिग्मन फ्रायड' के मनोविश्लेषण से प्रभावित मानी जाती है। वस्तुतः प्रेमचंद और यशपाल जैसे उपन्यासकारों ने भी मनोविज्ञान का प्रयोग किया, किंतु यह स्वतंत्र धारा के रूप में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी और देवराज के प्रयासों से स्थापित हुई। इस उपन्यासधारा की निम्नलिखित विशेषताएं है –

(क) इसमें पात्रों की संख्या कम होती है क्योंकि व्यक्ति के अंतर्मन का वर्णन करती है।

(ख) इसमें घटनाएं विरल होती हैं, क्योंकि इसमें चिंतन मनन को प्राथमिकता दी जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) इसमें बाह्य जगत की अपेक्षा अंतर्जगत की व्याख्या की जाती है।

(घ) इसकी भाषा सरल सहज नहीं होती, बल्कि इसमें प्रतीकों में बात कही जाती है।

वस्तुतः इस धारा का मानना था कि व्यक्ति की मूल प्रवृत्ति 'लिबिडो' की होती है और व्यक्ति का मूल्यांकन व्यक्ति के अवचेतन के स्तर पर किया जाना चाहिए।

प्रमुख उदाहरण -

जैनेन्द्र - परख, त्यागपत्र, सुनीता

अज्ञेय - शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप

इलाचंद्र जोशी - जिप्सी, संयासी, जहाज के पंछी

डॉ. देवराज - अजय की डायरी

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केशवः कठिन काव्य के प्रेत

केशव को शुक्ल जी ने 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। वस्तुतः किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले आवश्यक है कि इसका विश्लेषण किया जाए कि उन्हें कठिन काव्य का प्रेत क्यों कहा जाता है। इसके लिए उनकी पुस्तक- रामचंद्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया को ही आधार बनाना चाहिए।

पहला कारण यह है कि केशव पाण्डित्य, इतिहासकार और साहित्यकार तीनों रूपों का निर्वाह एक साथ कर रहे थे। उन्होंने जहाँगीर जसचंद्रिका में इतिहासकार की भूमिका निभाई, तो रामचंद्रिका में भक्त की। इस कारण उनकी भाषा में जुड़ाव नहीं रह पाया। उनकी भाषा में ब्रज के साथ-साथ बुन्देलखण्डी एवं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्वी भाषा का भी प्रभाव दिखाई देता ~~जाता~~ है।

उन्होंने वाक्यों को अत्यंत छोटा एवं आधारहीन भी बना दिया, जिससे उनके काव्य को समझना कठिन होता है जैसे -

"सी। धी। री। धी।
राम नाम। सत्य धाम॥"

उनके काव्य ~~केवल~~ में संबंध निर्वाह एवं मार्मिक प्रसंगों के वर्णन में भी कमी है। उन्होंने राम के वनगमन को केवल एक सूचना बना दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अलंकारों पर अनावश्यक बल दिया, जिससे चमत्कार के स्थान पर उनाक्रम पैदा करते हैं।

फिर भी इस ~~का~~ आलोचना के होते हुए भी उनके छंद वैविध्य और संवाद योजना की प्रशंसा की जा सकती है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) पद्माकर का श्रृंगार-वर्णन

पद्माकर रीतिकालीन कवि हैं। इन कवियों का मुख्य कार्य दरबार में रहकर सामंतों एवं रसिक समाज का मनोरंजन करना है।

पद्माकर ने श्रृंगार वर्णन पर अधिक महत्त्व दिया। उनका श्रृंगार मांसल एवं देहमूलक है। वे अपने एक उदाहरण में भोग के सभी उपादानों को प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए -

"गुलगुली गिलमें गलीचा है, गुनिजन हैं
चांदनी है, चिक है चिरागन की माला है।
कहें पद्माकर ज्यों गजक गिजा है
सजी
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।"

पद्माकर के श्रृंगार का वर्णन ऋतुओं के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुसार किया है। उदाहरण के लिए -

"या अनुपम की आग लखौ,
वहँ रावत किशोर, किशोरी,
गोरिन के रंग भीगिगो सांवरो
सांवरे के रंग भीगिगो गोरी।"

पद्माकर ने केवल संयोग श्रृंगार को ही प्राथमिकता नहीं दी, बल्कि वियोग श्रृंगार का भी वर्णन किया है। उदाहरण के लिए -

"पावस बनायो तो न बिरह बनायो
बिरह बनायो तो न पावस बनायो।"

पद्माकर का श्रृंगार वर्णन हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। बिहारी ही केवल पद्माकर को श्रृंगार वर्णन में टक्कर दे पाते हैं, अन्य कोई कवि नहीं

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) स्त्री-विमर्श के आलोक में समकालीन हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी उपन्यास परंपरा में स्त्री प्रत्येक काल में उपन्यास के केंद्र में बनी रही। प्रेमचंद ने सेवासदन में सुमन के माध्यम से, तो गोदान में धनिया और झुनिया के माध्यम से स्त्री समस्या को उठाया। इसी प्रकार यशपाल ने दिव्या में तो ~~जैनेन्द्र~~ जैनेन्द्र ने सुनीता, त्यागपत्र में नारी समस्या को उठाया।

किंतु वह स्वतंत्र धारा के रूप में स्वतंत्रता के पश्चात ही स्थापित हो सकी। ~~अब~~ स्त्री-विमर्श का मानना है कि स्त्री पीड़ा (पीड़ा) का वास्तविक वर्णन एक स्त्री ही कर सकती है। ये 'स्व वेदना'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

और संवेदना को भिन्न मानती हैं और 'स्व वेदना' को प्राथमिकता देती हैं।

वस्तुतः स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शहरीकरण को बढ़ावा मिला, महिलाएं घर से निकलकर आर्थिक क्रियाओं में संलग्न हुई। उन्हें राजनीतिक, आर्थिक अधिकार प्राप्त हुए।

इसी के साथ महिलाओं के साथ शोषण में वृद्धि हुई। कार्य-स्थल पर उनके साथ होने वाला यौन उत्पीड़न, घर में होने वाला पारिवारिक कलह, तलाक, स्त्री-पुरुष संबंधों में तनाव इत्यादि समकालीन उपन्यास वाद के केंद्र में आ गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्री विमर्श से संबंधित प्रमुख उपन्यासकार हैं - चित्रा मुद्गल, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी इत्यादि

कृष्णा सोबती ने 'मित्रो मरजानी' में स्त्री के ऊपर लादी गई यौन वर्जनाओं का अतिक्रमण किया। इसी प्रकार मन्नू भण्डारी ने 'आपका बण्टी' में तलाक की समस्या को उजागर किया। इसी प्रकार मृदुला गर्ग ने 'चितकोबरा' में स्त्री यौन उत्पीड़न का प्रश्न उठाया और प्रभा खेतान ने 'छिन्नमस्ता' में नारी अधिकारों की बात की।

अतः हम कह सकते हैं कि समकालीन उपन्यास में स्त्री विमर्श संबंधी उपन्यास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धारा अत्यंत सबल है और निरंतर प्रगतिशील है।

12½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रीतिकाव्य पर ललित कलाओं का प्रभाव किन रूपों में दिखाई पड़ता है? विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाव्य पर ~~अ~~ अनेक ललित कलाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वस्तुतः रीतिकाव्य सामंती परिवेश में रचा गया, ऐसे में यह स्वाभाविक है कि इस काव्य में ललित कलाओं का प्रभाव हो। रीतिकाव्य अनेक ललित कलाओं का समन्वित रूप है। बिहारी के इस दोहे से यह स्पष्ट भी होता है-

"तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रीत रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग।।"

रीतिकाव्य पर 'संगीत' का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वस्तुतः रीतिकालीन परिवेश ऐसा था, जिसमें एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दोहे से दोहे में चमत्कार पैदा करना था, ऐसे में यह स्वाभाविक ही कि उसमें संगीतात्मकता को घुलाया जाए। उदाहरण के लिए-

"भरी रही झनक- झनक तार तानती की,
तामें तनक - तनक झनक चुरीन की।"

रीतिकाव्य मुगलकाल से संबंधित है। इस काल में 'चित्रकला' का व्यापक विकास हुआ। जहाँगीर के काल में यह अत्यधिक विकसित हुई, तो वहीं शाहजहाँ के काल में इसमें 'चमक-दमक' पर अधिक बल दिया जाने लगा। इसका प्रभाव रीतिकाव्य पर भी दिखता है। उदाहरण के लिए-

"अंग - अंग नग जगमगाति
दीपशिखा की देह।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दिया कुसाय हुवै रहौ, वड़ो अंधेरो गेह।"

रीतिकाव्य में श्रृंगार वर्णन ~~बार~~ राग के अनुसार किया गया है। वस्तुतः इस काल में पहाड़ी एवं कांगड़ा चित्रकला ~~चि~~का विकास हुआ था, जिसमें राग के अनुसार चित्रांकन किया गया। इसका प्रभाव रीतिकाव्य भी दिखता है।

अतः हम कह सकते हैं कि ~~ये~~ रीतिकाव्य में विभिन्न ललित कलाओं के ~~प्रसंग~~ मिलते हैं।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' के मृणाल के चरित्र पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा से संबंधित कवि हैं। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों त्यागपत्र, सुनीता, परख सभी में ~~मुख्य~~ नारी चरित्रों को प्राथमिकता दी। त्यागपत्र की चरित्र 'मृणाल' जैनेन्द्र के उपन्यासों की सबसे सशक्त चरित्र मानी जाती है। मृणाल के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएं देखने को मिलती हैं:-

(क) मृणाल का चरित्र 'वक्र' है। कोई भी पाठक यह अनुमान नहीं लगा सकता कि मृणाल का अगला कदम क्या होगा?

(ख) मृणाल अपने अहं को अंत तक ~~अहुण~~ बचाए रखती है। उसका अहं कई बार चोटिल होता है, किंतु वह अपने अहं को अंत तक बचाए रखती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) मृणाल के चरित्र में विरोध एवं समन्वय, जैसे परस्पर विरोधी गुण एक साथ दिखते हैं। मृणाल कहती है - "मैं समाज को तोड़ना नहीं चाहती, समाज टूटा तो फिर हम कहाँ रहेंगे।"

(घ) आत्मसंघर्ष का गुण - मृणाल अपने पूरे जीवन भर आत्मसंघर्ष करती है और अंत में भी वह उच्चवर्ग के बीच रहकर जीवन को जीती है।

(ङ) मृणाल में आत्मसम्मान है। प्रमोद के बार - बार कहने के बावजूद भी वह घर नहीं लौटती और अपने निर्णय पर टिकी रहती है।

(च) मृणाल के चरित्र में सेवाभाव जैसा चरित्र भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विद्यमान है। वस्तुतः मृणाल समाज के निम्न वर्ग के बीच रहकर उनकी सेवा करती है।

(छ) यौन उन्मुक्तता का उदात्तीकरण

मृणाल यौन उन्मुक्तता चाहती है और अंत में उच्छिष्ट वर्ग के बीच रहकर वह उसका उदात्तीकरण कर देती है।

(ज) मृणाल स्वतंत्रता में विश्वास करती है। उसका यह कथन "मैं पतंग की तरह उड़ना चाहती हूँ" इसी को स्पष्ट करता है।

अतः स्पष्ट है कि मृणाल हिंदी उपन्यास परंपरा की सबसे सशक्त नारी चरित्र है।

9½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation